IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंजाब की महिला संगीत-विद्वानों द्वारा प्रकाशित संगीत साहित्य: शैक्षिक दृष्टिकोण से अध्ययन

डा. रमनदीप कौर, सहायक प्रोफेसर, प्रदर्शन कला विभाग, गुरु काशी यूनिवर्सिटी, तलवंडी साबो, बठिंडा

सार:

भारतीय संगीत परंपरा में संगीत को गुरुमुखी विद्या का स्थान प्राप्त है जिसमें प्रारम्भ से ही गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से शिक्षा दी जाती रही है। इस अध्ययन का उद्देश्य पंजाबी महिला संगीत विद्वानों द्वारा प्रकाशित संगीत साहित्य का शैक्षिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है। संगीत एक क्रियात्मक कला होते हुए भी, इसके सैद्धांतिक पक्ष का महत्व अनिवार्य है। पंडित भातखंडे और विष्णु दिगंबर पलुस्कर जैसे विद्वानों ने गुरु-शिष्य पद्धति को संस्थागत शिक्षा में रूपांतरित किया जिससे संगीत शिक्षा में संरचनात्मक विकास हुआ।

प्रारंभिक प्रकाशन संस्कृत, फ़ारसी, उर्दू, ब्रज, अंग्रेज़ी और हिन्दी में हुआ जबकि पंजाबी में संगीत प्रकाशन 19वीं सदी के अंत में आरंभ हुआ। प्रारंभिक प्रकाशन गुरमत संगीत विधा पर आधारित थे। पंजाबी महिला विद्वानों ने संस्थागत शिक्षा की आवश्यकताओं और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से भारतीय संगीत पर प्रकाश डाला। उनके प्रकाशनों में शास्त्रीय, लोक, सूफ़ी, गुरमत संगीत और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से संगीत शिक्षा शामिल है।

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने इन प्रयासों को संवर्धित किया जहाँ पाठ्य-पुस्तकें, शोध-पत्र और विशेषांक प्रकाशित किए गए। डॉ. प्रेमलता शर्मा, मनोरमा शर्मा, डॉ. गीता पैंटल, डॉ. तृप्त कपूर, डॉ. निवेदिता उप्पल, डॉ. पंकज माला शर्मा, डॉ. सरोज घोष, डॉ. भगवंत कौर, डॉ. जसबीर कौर, डॉ. देविंदर कौर, डॉ. नरिंदर कौर, डॉ. हरजस कौर, डॉ. जसबीर कौर और अन्य विदुषियों ने पंजाबी और अन्य भाषाओं में मौलिक और अनुवादित कृतियों के माध्यम से संगीत की सैद्धांतिक और क्रियात्मक ज्ञानवृत्ति को संरक्षित किया। इन कृतियों में राग, बंदिशें, घराने, संगीत विधाएँ और सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में संगीत का महत्व स्पष्ट किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पंजाबी महिला संगीत-विद्वानों ने न केवल भारतीय संगीत में पंजाबियों के योगदान को उजागर किया बल्कि शिक्षा और शोध के माध्यम से संगीत को आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित और प्रासंगिक बनाया। उनकी प्रकाशन गतिविधियाँ शैक्षिक, सैद्धांतिक और सांस्कृतिक दृष्टियों से अत्यंत मूल्यवान हैं जो संगीत के अध्ययन, प्रशिक्षण और संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण स्रोत साबित होती हैं।

मुख्य शब्द: पंजाबी महिला संगीत विद्वान, संगीत साहित्य, शैक्षिक दृष्टिकोण, गुरुमुखी विद्या, संस्थागत शिक्षा, शास्त्रीय और लोक संगीत, प्रकाशन.

भारतीय परंपरा में संगीत को गुरुमुखी विद्या का स्थान प्राप्त है। प्रारम्भ से ही संगीत की शिक्षा गुरु-शिष्य परंपरा के अनुसार दी जाती रही है जिसमें संगीत का क्रियात्मक पक्ष प्रमुख रहा है। निस्संदेह संगीत एक क्रियात्मक कला है परंतु सैद्धांतिक पक्ष के बिना भी संगीत की पहचान खो जाने का भय बना रहता है। संगीत में यह धारणा प्रचलित रही है कि सैद्धांतिक और क्रियात्मक दोनों अलग-अलग क्षेत्र हैं और इन दोनों क्षेत्रों के विद्वान भी भिन्न-भिन्न रहे हैं। इस धारणा में परिवर्तन लाने हेतु पंडित विष्णु नारायण भातखंडे और विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत दी जाने वाली संगीत शिक्षा को संगीत शिक्षण पद्धति में रूपांतरित किया, जिससे संस्थागत संगीत शिक्षा प्रणाली की नींव पड़ी। परिणामस्वरूप संगीत शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन आना स्वाभाविक था। संगीत-शिक्षा में जहाँ अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुईं वहीं समय-सीमा निर्धारित होने के कारण सामूहिक शिक्षण पद्धति का प्रचलन हुआ। इसके परिणामस्वरूप गुणात्मकता का स्थान मात्रात्मकता ने ले लिया जो कालांतर में एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आई।

भातखंडे और पलुस्कर जैसे विद्वानों ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए अपने ज्ञान को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित कर संगीत-जिज्ञासुओं और विद्यार्थियों को अमूल्य योगदान दिया। इस कार्य के उपरांत संगीत विषय पर क्षेत्रीय भाषाओं में भी पुस्तकों की रचना की गई ताकि संस्थागत शिक्षा प्रणाली को सुव्यवस्थित ढंग से निभाया जा सके।

प्राचीन और मध्यकाल में संस्कृत, फ़ारसी, उर्दू, ब्रज और आधुनिक काल में अंग्रेज़ी व हिन्दी भाषा में पुस्तकों का प्रकाशन हुआ वहीं पंजाबी भाषाई संगीत प्रकाशनों का प्रारम्भिक कार्य 19वीं सदी के अंत में शुरू हुआ और इनका प्रकाशित रूप 20वीं सदी की शुरुआत में सामने आने लगा। यदि हम पंजाबी संगीतकारों द्वारा किए गए संगीत प्रकाशनों की बात करें तो प्रारम्भिक प्रकाशन गुरमत संगीत विधा के अनुरूप ही प्रकाशित हुए।

भारतीय संगीत से संबंधित पुस्तकों का प्रकाशन हिन्दी और अंग्रेज़ी भाषाओं के साथ-साथ अनेक क्षेत्रीय भाषाओं में भी हुआ। इन पुस्तकों में पंजाब की संगीत परंपरा को उचित रूप से उजागर नहीं किया गया। सम्भवतः ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि ये पुस्तकें गैर-पंजाबी संगीतकारों द्वारा लिखी गई थीं। डॉ. गुरनाम सिंह इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि भारतीय संगीत के इतिहास का अध्ययन करते समय आज तक किसी भी इतिहासकार ने न्यायपूर्ण और संतुलित विधि नहीं अपनाई। इस इतिहास में पंजाबियों के योगदान को प्रायः उपेक्षित ही किया गया है।[1]

इसमें कोई संदेह नहीं कि पंजाबियों ने भारतीय संगीत परंपरा को क्रियात्मक दृष्टि से अधिक प्रफुल्लित किया जबकि सैद्धांतिक दृष्टि से संरक्षण के लिए वे कुछ हद तक उदासीन रहे। यही कारण रहा कि गैर-पंजाबी संगीत विद्वान लेखकों ने भारतीय संगीत में पंजाबियों के योगदान को वह स्थान नहीं दिया जो मिलना चाहिए था। समय के साथ जब संस्थागत शिक्षण संस्थानों में संगीत को एक स्वतंत्र विषय के रूप में लागू किया गया, तब पंजाबी संगीतकार-विद्वान लेखकों ने भी इस कमी को अनुभव करते हुए पुस्तकों की रचना आरंभ की। उसके बाद ही पंजाबियों द्वारा भारतीय संगीत में योगदान को उजागर करते हुए पुस्तकों, शोध-कार्यों और शोध-पत्रों के रूप में प्रकाशन होने लगा, जो निरंतर जारी है।

संगीत की सैद्धांतिक और क्रियात्मक सामग्री के प्रकाशन में भाषा विभाग, पंजाब, पंजाब स्टेट यूनिवर्सिटी टेक्स्टबुक बोर्ड, श्रोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, चीफ़ खालसा दीवान और अन्य प्रकाशन संस्थाओं में से पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। यदि यह कहा जाए कि भारत की सभी विश्वविद्यालयों से अधिक, मातृभाषा, विज्ञान, इतिहास, शोध, आत्मकथाएँ, जीवनियाँ, व्याख्याएँ, टीकाएँ और कोश-ग्रंथ लिखने में इस विश्वविद्यालय ने सर्वाधिक योगदान दिया है, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा समय-समय पर संगीत कला से संबंधित पत्रिकाओं के विशेष अंक प्रकाशित किए जाते रहे हैं और विश्वविद्यालय में आयोजित सम्मेलनों, सेमिनारों आदि में संगीत से संबंधित शोध-पत्र पढ़े जाते हैं। पंजाब की लोक संगीत और सूफ़ी संगीत परंपराओं को सैद्धांतिक और क्रियात्मक दोनों दृष्टियों से संजोने हेतु पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के संगीत विभाग में इनसे संबंधित विशेष पाठ्यक्रम आरंभ किए गए हैं, ताकि विद्यार्थी पंजाबी लोक-संगीत और सूफ़ी संगीत को क्रियात्मक पक्ष के साथ-साथ सैद्धांतिक पक्ष से भी समझ सकें।

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के अनेक विद्वानों ने भी संगीत प्रकाशन के क्षेत्र में अमूल्य सेवा प्रदान की। पंजाबी संगीतकारों द्वारा इन सभी विधाओं को सैद्धांतिक रूप से सुरक्षित करने का प्रयास भी किया गया। भारतीय संगीत के क्रियात्मक विकास के साथ-साथ सैद्धांतिक क्षेत्र में भी पंजाबियों के योगदान को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। पंजाबी संगीतकारों, विद्वानों और चिंतकों ने अपने ज्ञान के स्रोत को अपनी मातृभाषा पंजाबी के साथ-साथ अन्य भाषाओं में प्रकाशित कराकर भारतीय संगीत के मूल स्वरूप को आने वाली पीढ़ियों को सौंपने का कार्य अत्यंत सफलतापूर्वक किया है।

प्रकाशनों की शुरुआत अनुवादित पुस्तकों से हुई, अर्थात् भारतीय संगीत से संबंधित अन्य विद्वानों के कार्यों को पंजाबी लेखकों द्वारा पंजाबी भाषा में अनुवादित किया गया, जैसे-*संगीत कौमुदी*, *संगीत शास्त्र विवेचन*, *संगीत शास्त्र दर्पण*, *भारतीय संगीत : स्वरूप ते सुहज* आदि।

यदि हम पंजाबी महिला संगीत विद्वानों की पंजाबी और अन्य भाषाओं में प्रकाशित कृतियों की चर्चा करें तो यह प्रकाशन पंजाबी भाषा के संगीत प्रकाशनों की तुलना में बहुत कम हैं। इनमें डॉ. प्रेमलता शर्मा ने *संगीत राज*, *बृहदेशी* जैसे ग्रंथों की अंग्रेज़ी और हिंदी भाषाओं में टीका की है। डॉ. मनोरमा शर्मा ने *संगीत एवम् शोध प्रविधि* (1990), *लोक मानस के सुरिले स्वर*, *संगीत विविधा* (2008), *शास्त्रीय संगीत की परंपरा*, *हिमाचल संस्कृति एवम् परंपरा*, *संगीत की अनुसंधान प्रक्रिया*, *Music Aesthetics*, *Tradition of Hindustani Music* (2006), *Musical Heritage of India*, *Special Education : Music Therapy* (1996), *Music Education : New Horizon*, *Raga Kalpadram* (अनुवाद) जैसी पुस्तकों की रचना की है।

डॉ. अनुपम महाजन ने *Ragas in Indian Classical Music* (1990), *Indian Music and Ustad Mushtaq Ali Khan* (1993) की रचना की।[2]

डॉ. गीता पैंटल द्वारा लिखित *पंजाब की संगीत परंपरा* (1988) पंजाब की संगीत परंपरा पर आधारित एक महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसमें पंजाब की संगीत परंपरा के प्रत्येक पक्ष को छूने का प्रयास किया गया है।[3] पंजाब प्रदेश की संगीत परंपरा पर गैर-पंजाबी भाषा में इतना विस्तृत वर्णन पहली बार किसी लेखक के प्रयास से प्रकाशित हो सका।

उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा (1988) नामक पुस्तक में डॉ. तृप्त कपूर ने ग्रंथ को आठ भागों में विभाजित करते हुए संगीत, विभिन्न शैलियाँ, संगीत और ललित कला का क्षेत्र, घराना पद्धति, घरानेदार वादकों का परिचय, शिक्षा संस्थाओं का ऐतिहासिक विश्लेषण, शैक्षणिक संस्थाओं की समस्याएँ और उनके समाधान आदि विषयों को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है।[4]

डॉ. निवेदिता उप्पल ने *Tradition of Hindustani Music: A Sociological Approach* (2010) नामक पुस्तक की रचना की। यह पुस्तक हिंदुस्तानी संगीत के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य और अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें संगीत कला को भारतीय सांस्कृतिक संदर्भ में देखते हुए इसके सामाजिक सरोकारों का वर्णन किया गया है। इस कृति का विशेष महत्व इस बात में है कि इसमें बदलती हुई राजनीतिक परिस्थितियों के संदर्भ में हिंदुस्तानी संगीत के सामाजिक इतिहास का दस्तावेज़ीकरण प्रस्तुत किया गया है। लेखिका ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रमुख गायन शैलियों-ध्रुपद, ख़याल, टप्पा और ठुमरी-के उद्भव और विकास को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विस्तारपूर्वक स्पष्ट किया है। इसके अतिरिक्त, घरानों को एक सामाजिक संस्था के रूप में प्रस्तुत करते हुए गुरु-शिष्य परंपरा की सामाजिक सार्थकता पर चर्चा की गई है। यह भी प्रतिपादित किया गया है कि कलाकार समाज का अंग होता है, परंपरा का वाहक होता है तथा समाज को प्रभावित करने और उसे नई दिशा देने की सामर्थ्य रखता है। इस सिद्धांत को पुस्तक में विशेष रूप से रेखांकित करने का प्रयास किया गया है।[5]

डॉ. पंकज माला शर्मा ने *सामगान उद्भव, व्यवहार एवं सिद्धांत*[6] (1996) नामक पुस्तक की रचना की, जिससे वैदिक काल में सामगान संबंधी महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने *नादबिंदूपनिषद* (2020) की रचना की, जो संगीत विद्यार्थियों के लिए एक अमूल्य धरोहर है।

डॉ. सरोज घोष द्वारा *कन्हड़ा का उद्भव और विकास* (2000) तथा *स्वरांजलि सारंग भेद* (2015) नामक पुस्तकों की रचना की गई। *कन्हड़ा का उद्भव और विकास* पुस्तक को छह अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहले अध्याय में राग की व्युत्पत्ति, परिभाषा तथा प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक राग वर्गीकरण का विवेचन किया गया है। दूसरे अध्याय में कन्हड़ा शब्द का अर्थ, उसके विभिन्न रूपांतर और प्राचीन से आधुनिक काल तक कन्हड़ा राग के स्वरूप-परिवर्तन का विस्तृत वर्णन है। तीसरे, चौथे और पाँचवें अध्यायों में कन्हड़ा के प्रचलित और अप्रचलित रागों तथा राग-प्रकारों का ऐतिहासिक विवेचन स्वर-विस्तार और गतों सहित किया गया है। छठे अध्याय में कन्हड़ा के अल्प-वर्यित प्रकारों के नामों का उल्लेख किया गया है। स्वरांजलि सारंग भेद (2015) पुस्तक में रागांग राग, सारंग का अर्थ, उसकी उत्पत्ति और क्रमिक विकास का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में सारंग के विभिन्न प्रचलित और अप्रचलित रागों का स्वरूपगत विश्लेषण किया गया है। सारंग के प्रकारों की गतें, स्वर-विस्तार, सम और विषम तालों में रचित नवीन एवं मौलिक रचनाएँ इस पुस्तक को और भी आकर्षक बनाती हैं।[7]

डॉ. भगवंत कौर ने पारंपरिक हिंदुस्तानी सैद्धांतिक संगीत की पुस्तक का निर्माण विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर किया है जिसमें संगीत के सैद्धांतिक और पारंपरिक तत्त्वों, शैलियों तथा गायन और वादन की विभिन्न विधाओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। डॉ. रेनू सचदेव ने *धार्मिक परंपराएँ एवं हिंदुस्तानी म्यूज़िक* नामक पुस्तकें लिखीं। डॉ. गुरप्रीत कौर ने *भारतीय संगीत के अनमोल रत्न लालमणि मिश्र* (2004) में पंडित लालमणि मिश्र द्वारा भारतीय संगीत की वादन परंपरा में दिए गए योगदान को रेखांकित किया है।[8] डॉ. नवजोत कौर कसेल ने *वादन संगीत का शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य* और *तत् वाद्यों की जननी वीणा, पंजाब का समकालीन संगीत* (1986), *सुप्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफ़र ख़ाँ* (2016) की जीवनी और उनके संगीत योगदान पर आधारित कृति भी संगीत साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।

डॉ. नरिंदर कौर ने *संगीत सुदर्शिनी* पुस्तक में भारतीय संगीत के इतिहास को प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल के आधार पर विभाजित करके प्रस्तुत किया है। इस पुस्तक की सामग्री संगीत विद्यार्थियों और पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी है। ऐसा कार्य किसी अन्य पंजाबी विद्वान की पुस्तक में देखने को नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त, डॉ. नरिंदर कौर ने *संगीत के मूल तत्त्व*, *Music for Life: Social and Psychological Objectives* तथा *Indian Music: A Glance at its Various Perspectives* (2014) आदि ग्रंथ अंग्रेज़ी और हिंदी भाषाओं में लिखे और प्रकाशित कराए।

प्रेरणा अरोड़ा और तेजपाल सिंह द्वारा लिखित *संगीत के देदीप्यमान सूर्य उस्ताद अमीर ख़ाँ: जीवन एवं रचनाएँ* (2005) में उस्ताद अमीर ख़ाँ साहिब के जीवन से संबंधित घटनाओं का प्रभावशाली वर्णन मिलता है।[9]

प्रो. डॉ. नीरा गरोवर (मदन) ने *महाराष्ट्र में वागेकारों की परंपरा* (2013) पुस्तक प्रकाशित करवाई, जो किसी पंजाबी संगीत लेखक द्वारा किसी अन्य प्रांत के संगीतकारों और वागेकारों पर किया गया एक अनूठा कार्य है। इसके अतिरिक्त, *हिंदुस्तानी संगीत में संप्रकृत रागों में भिन्नता* नामक पुस्तक भी उनकी प्रमुख कृतियों में से एक है। डॉ. हरजस कौर ने हिंदी भाषा में *गुरमत संगीत: परिचयात्मक अध्ययन* नामक पुस्तक की रचना की। डॉ. मीरा मदन (जे. कुमार) की *नामधारी सिख संप्रदाय की हिंदुस्तानी संगीत को देन* (2019) और *पंजाब के शास्त्रीय संगीत में तंत्री वादकों का योगदान* जैसी पुस्तकें संगीत अध्येताओं और शोधार्थियों के लिए मील का पत्थर सिद्ध हुईं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपने पिता पन्ना लाल मदन द्वारा रचित ग्रंथ- *संगीत शास्त्र विज्ञान*, *संगीत अध्यापन*, *भारतीय संगीत और उसका विकास* तथा *संगीत कला का इतिहास*-को पुनः प्रकाशित कराया। डॉ. सिम्मी रविंदर सिंह ने *भारतीय संगीत में शुद्धतत्त्व की अवधारणा* नामक पुस्तक की रचना की।

गुरमत संगीत की ऐतिहासिक विलक्षणता[10] *(2006), 'गुरु अर्जन बाणी: संगीत प्रबंध' और 'राग नाद शब्द सोहणे'* जैसी पुस्तकों की लेखिका डॉ. जसबीर कौर संगीत विषय की प्रख्यात विदुषी हैं, जो पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के *पंजाबी भाषा विकास विभाग* में प्रोफ़ेसर और प्रमुख के रूप में सेवाएँ देने के उपरांत सेवानिवृत्त हुईं। उन्होंने *पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला* द्वारा प्रकाशित *सामाजिक विज्ञान पत्र* के अनेक विशेषांक संपादित किए, जिनमें *गुरमत संगीत अंक, संगीत वाद्य अंक, गायन शैलियाँ अंक, संगीत घराने अंक, सूफ़ी संगीत अंक* तथा *भारतीय संगीत के प्रमुख संगीतकार अंक* शामिल हैं। ये सभी विशेषांक अपने आप में महत्वपूर्ण संगीत संबंधी सामग्री हैं। *सिख धर्म और भारतीय संगीत* (2008) पुस्तक डॉ. जतिंदर कौर की उल्लेखनीय रचना है। डॉ. साहिबा पिछले बीस वर्षों से *खालसा कॉलेज फॉर वूमेन, अमृतसर* में संगीत गायन की व्याख्याता के रूप में कार्यरत हैं। यह पुस्तक मौलिक और ज्ञानवर्धक विषय-वस्तु पर आधारित है, जो मध्यकालीन समय में *सिख धर्म और भारतीय संगीत* के अज्ञात आयामों का विवेचन करती है।[11] वास्तव में, यह कृति संपूर्ण भारत की धार्मिक परंपराओं के संगीत का गहन अध्ययन प्रस्तुत करती है।

संगीत ग्रंथ और भारतीय संगीत का इतिहास (1982) पुस्तक की लेखिका श्रीमती चंद्रकांता खोसला संगीत विषय की अध्यापिका थीं। यह पुस्तक *पंजाब विश्वविद्यालय टेक्स्टबुक बोर्ड, चंडीगढ़* द्वारा 1982 में प्रकाशित की गई। इसकी रचना उस समय हुई, जब पंजाबी भाषा में संगीत संबंधी प्रकाशन अत्यंत अल्प थे। सात अध्यायों में विभक्त इस पुस्तक में, संगीत के इतिहास का अध्ययन क्यों आवश्यक है तथा भारत की भौगोलिक स्थिति का संगीत पर क्या प्रभाव पड़ा है-इन विषयों के माध्यम से संगीत विद्यार्थियों को संगीत से जोड़ने का प्रयास किया गया है।[12] ऐसी रचनाएँ पंजाबीभाषी संगीत पाठकों के लिए मील का पत्थर सिद्ध हुईं। दुर्भाग्यवश, इस पुस्तक का पुनः प्रकाशन नहीं हो सका।

संगीत रत्नावली गायन पुस्तक श्रीमती सुरिंदर कपिला की कृति है जिसे पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला ने 1988 में प्रकाशित किया। इस पुस्तक को दो भागों में प्रकाशित किया गया है-*संगीत रत्नावली गायन* और *संगीत रत्नावली शास्त्र पक्ष*। संगीताचार्य प्रो. तारा सिंह ने इसमें सह-लेखक के रूप में कार्य किया है। इस पुस्तक की मूल लेखिका ख़याल गायकी के सिरमौर घराने (पटियाला घराना) के उस्ताद बड़े गुलाम अली ख़ां साहिब के पुत्र मुनव्वर अली ख़ां साहिब की शिष्या हैं। इन पुस्तकों में लेखिका ने बंदिशों की रचना "मधु" उपनाम के अंतर्गत की है। लेखिका ने कुछ स्व-रचित बंदिशें भी इन पुस्तकों में सम्मिलित की हैं। पुस्तक की मूल लेखिका के साथ पिछली पीढ़ी के विद्वान का नाम सह-लेखक के रूप में आना कुछ तर्कसंगत प्रतीत नहीं होता।

गायन कला (1989) भाग दूसरा पुस्तक की रचना श्रीमती देविंदर कौर ने की, जिसका प्रकाशन 1989 में पंजाबी विश्वविद्यालय के माध्यम से हुआ।[13] इस पुस्तक का लेखन कार्य उस्ताद सोहन सिंह की देखरेख में आरंभ हुआ। *संगीत की शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग (2010)* नामक पुस्तक डॉ. देविंदर कौर की कृति है जिसे पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने 2010 में प्रकाशित किया।[14] यह पुस्तक संगीत विषय से संबंधित एक अनूठी रचना है जिसमें लेखिका ने संगीत की शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को अपनाने पर ज़ोर दिया है। मनोवैज्ञानिक आधार पर दी गई शिक्षा की उपयुक्तता और कार्ययोजना की सफलता को मापने के लिए प्रयुक्त विधियों का उल्लेख इस पुस्तक को और भी सार्थक बनाता है। आपकी कलम से निकली *संगीत रूप* नामक पुस्तक बी.ए. के संगीत विद्यार्थियों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुई।

इसी समय स्वर्णजीत कौर की *मध्ययुगीन धार्मिक संप्रदायों में संगीतिक पक्ष* (2004) सामने आई जिसमें लेखिका ने मध्ययुग में उत्पन्न संत, सूफ़ी, वैष्णव और हरिदासी संप्रदायों के भक्त कवियों द्वारा संगीत के उपयोग को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। शीर्षक से ही स्पष्ट है कि पुस्तक में मध्ययुगीन धार्मिक संप्रदायों के संगीतिक तत्वों को उजागर करने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक पंजाबी लेखकों द्वारा रचित संगीत प्रकाशनों में अद्वितीय स्थान रखती है, क्योंकि किसी और रचना में ऐसा उल्लेख नहीं मिलता जिसमें मध्ययुगीन धार्मिक संप्रदायों के संगीतिक पहलुओं को स्पष्ट करने का प्रयास हुआ हो।

डॉ. हरजस कौर द्वारा *भारतीय शास्त्रीय संगीत और गुरमत संगीत* (2015) प्रकाशित की गई जिसमें मध्यकालीन भारतीय शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि से लेकर गुरमत संगीत की महान परंपरा का उल्लेख अत्यंत सुस्पष्ट रूप से किया गया है।

संगीत की संस्थागत शिक्षा प्रणाली (हिंदुस्तानी संगीत के संदर्भ में) नामक पुस्तक 2019 में डॉ. हरमिंदर कौर की कलम से प्रकाशित हुई। इसमें लेखिका ने हिंदुस्तानी संगीत की संस्थागत शिक्षा प्रणाली की उत्पत्ति और विकास, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की रूपरेखा, अध्यापन विधि और सहायक सामग्री, मूल्यांकन विधि और परीक्षा प्रणाली की सार्थकता, शिक्षक और शिक्षार्थी–शिक्षा प्रणाली के दो ध्रुव–जैसे विषयों को विस्तारपूर्वक उजागर किया है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पंजाबी महिला संगीत-विद्वानों ने भारतीय संगीत परंपरा और संगीत शिक्षा दोनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने न केवल संगीत की क्रियात्मक और पारंपरिक विधाओं को संरक्षित किया बल्कि शैक्षिक दृष्टिकोण से संगीत के सिद्धांत और इतिहास को भी व्यापक पाठ्यक्रम और प्रकाशनों के माध्यम से प्रस्तुत किया। गुरु-शिष्य परंपरा से लेकर संस्थागत संगीत शिक्षा प्रणाली तक के विकास में उनके प्रयासों ने संगीत शिक्षण को व्यवस्थित, सुलभ और समग्र बनाया। महिला संगीत-विद्वानों के प्रकाशित कार्य, जैसे कि शास्त्रीय संगीत, गुरमत संगीत, लोक-संगीत, सूफ़ी संगीत, संगीत थेरपी और संगीत मनोविज्ञान पर आधारित पुस्तकें और शोध-पत्र, संगीत शिक्षा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान साबित हुए हैं। इन प्रकाशनों ने विद्यार्थियों, शोधार्थियों और संगीत-जिज्ञासुओं के लिए अध्ययन, अनुसंधान और अभ्यास के लिए ठोस आधार तैयार किया।

अध्ययन से यह भी उजागर हुआ कि पंजाबी महिला संगीतकारों ने अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं में भी अपने ज्ञान का प्रकाशन कर, भारतीय संगीत की परंपरा को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का कार्य किया। उनके प्रयासों ने यह सिद्ध किया कि संगीत में महिला विद्वानों की भूमिका केवल कलात्मक नहीं बल्कि शैक्षिक, शोध और प्रकाशन क्षेत्रों में भी अत्यंत प्रभावशाली रही है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पंजाबी महिला संगीत-विद्वानों की प्रकाशित कृतियाँ संगीत शिक्षा को सैद्धांतिक और क्रियात्मक दोनों दृष्टियों से समृद्ध करने में अग्रणी रही हैं और उनका योगदान संगीत के अध्ययन, संरक्षण और संवर्धन के लिए अनिवार्य और मूल्यवान है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] डॉ. गुरनाम सिंह, *पंजाबी संगीतकार*, आदिका, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2005
[2] महाजन, डॉ. अनुपम. *Indian Music and Ustad Mushtaq Ali Khan*. हर-आनंद पब्लिकेशन्स, 1993.
[3] कौर, डॉ. गीता पैंटल. *पंजाब की संगीत परंपरा*. राधा पब्लिकेशन, 1988.
[4] कपूर, डॉ. तृप्त. *उत्तरी भारत में संगीत*. राजकमल प्रकाशन, 1988.
[5] उप्पल, डॉ. निवेदिता. *Tradition of Hindustani Music: A Sociological Approach*. कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स, दिल्ली, 2010.
[6] शर्मा, डॉ. पंकज माला. *सामगान उद्भव, व्यवहार एवं सिद्धांत*. कात्यायन वैदिक साहित्य प्रकाशन, होशियारपुर, 1996.
[7] घोष, डॉ. सरोज. *स्वरांजलि सारंग भेद*. संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2015.
[8] कौर, डॉ. गुरप्रीत. *भारतीय संगीत के अनमोल रत्न: लालमणि मिश्र*. कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स, दिल्ली, 2004.
[9] अरोड़ा, प्रेरणा, और तेजपाल सिंह. *संगीत के देदीप्यमान सूर्य: उस्ताद अमीर ख़ाँ – जीवन एवं रचनाएँ*. कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रिब्यूटर्स, दिल्ली, 2005.
[10] कौर, डॉ. जसबीर. *गुरमत संगीत की ऐतिहासिक विलक्षणता*. छत्तर सिंह जीवन् सिंह, अमृतसर, 2006.
[11] कौर, डॉ. जतिंदर. *सिख धर्म और भारतीय संगीत*. जवाहर पब्लिशर्स, अमृतसर, 2008.
[12] खोसला, श्रीमती चंद्रकांता. *संगीत ग्रंथ और भारतीय संगीत का इतिहास*. पंजाब विश्वविद्यालय टेक्स्टबुक बोर्ड, चंडीगढ़, 1982.
[13] कौर, डॉ. देविंदर. *गायन कला (भाग 2)*. पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1989.
[14] कौर, डॉ. देविंदर. *संगीत की शिक्षा में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग*. पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 2010.